



# Devendra

31 Aug 1995

04:07 PM

Chitorgarh

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121574401

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 31/08/1995  
दिन \_\_\_\_\_: गुरुवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 16:07:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 24:48:02 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Chitorgarh  
राज्य \_\_\_\_\_: Rajasthan  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 24:53:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 74:38:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:31:28 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 15:35:32 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:00:31 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 14:12:05 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:11:47 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:51:39 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:39:52 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: शरद  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 13:46:00 सिंह  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 26:49:27 धनु

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: तुला - शुक्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: स्वाति - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: राहु  
योग \_\_\_\_\_: ब्रह्म  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: महिष  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: सर्प  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: ता-तरुण  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: स्वर्ण - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: कन्या

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1917	भाद्रपद	9
पंजाबी	संवत : 2052	भाद्रपद	15
बंगाली	सन् : 1402	भाद्रपद	14
तमिल	संवत : 2052	आवनी	15
केरल	कोल्लम : 1171	चिंगम	15
नेपाली	संवत : 2052	भाद्रपद	15
चैत्रादि	संवत : 2052	भाद्रपद	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2052	भाद्रपद	शुक्ल 5

### पंचांग

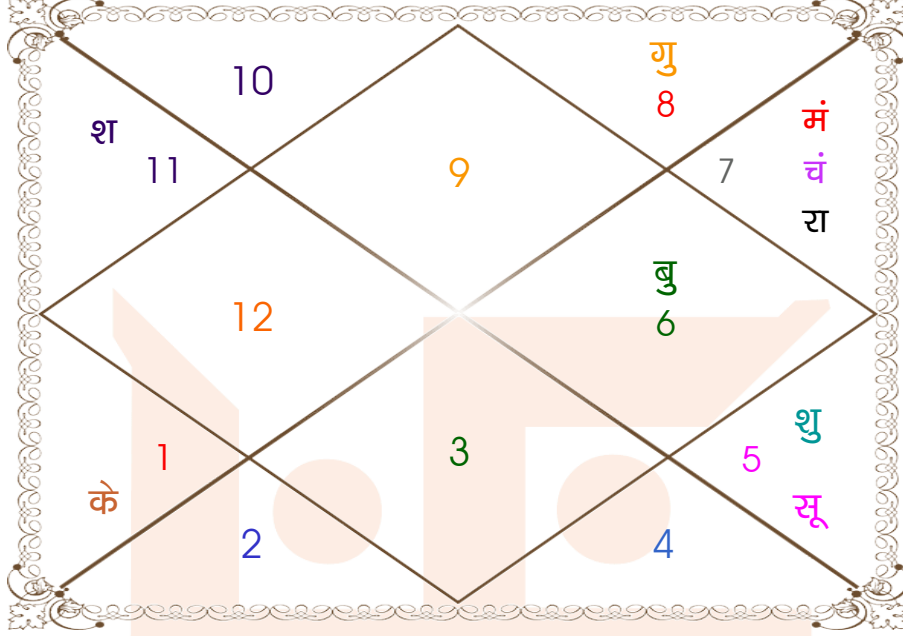
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 5  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 06:58:55  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 6  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : स्वाति  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 18:29:27 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : स्वाति  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : ब्रह्म  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 17:37:53 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : ब्रह्म  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बालव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 06:58:55 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 52:21:40  
भभोग \_\_\_\_\_ : 58:17:47  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : राहु 1 वर्ष 10 मा 3 दि

### घात चक्र

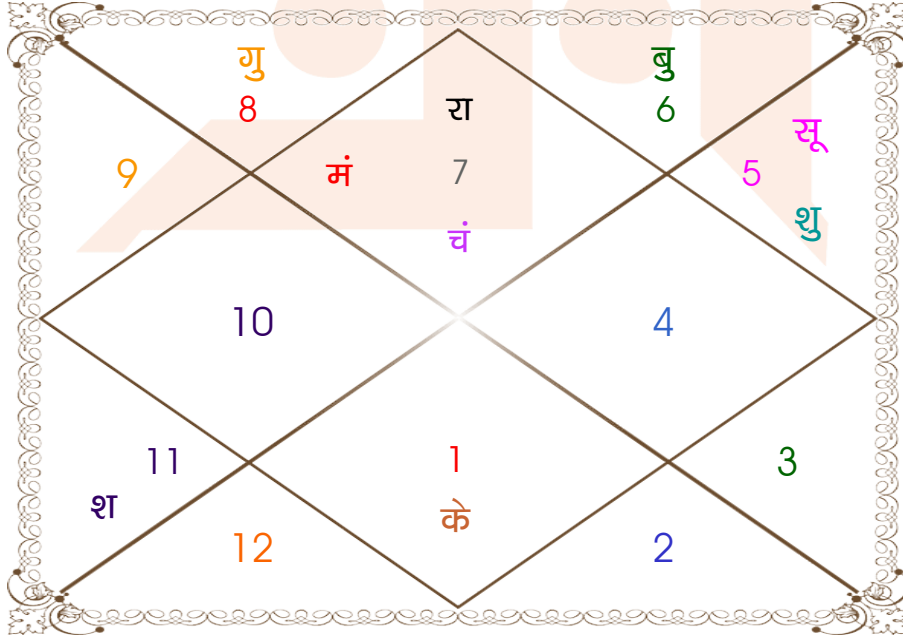
मास \_\_\_\_\_ : माघ  
तिथि \_\_\_\_\_ : 4-9-14  
दिन \_\_\_\_\_ : गुरुवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : शतभिषा  
योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : गरुड़  
लग्न \_\_\_\_\_ : कन्या  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कन्या  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : धनु  
मंगल \_\_\_\_\_ : तुला  
बुध \_\_\_\_\_ : कर्क  
गुरु \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
शुक्र \_\_\_\_\_ : धनु  
शनि \_\_\_\_\_ : सिंह  
राहु \_\_\_\_\_ : मकर

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुण्डली

	के		
श			
			शु सू
ल	गु	रा चं मं	बु

### लग्न कुण्डली

	के		
			श
सू शु		मं चं रा	ल
	बु		गु

विंशोत्तरी  
राहु 1वर्ष 10मा 3दि  
राहु

31/08/1995

05/07/2099

राहु	04/07/1997
गुरु	04/07/2013
शनि	04/07/2032
बुध	04/07/2049
केतु	04/07/2056
शुक्र	04/07/2076
सूर्य	05/07/2082
चन्द्र	04/07/2092
मंगल	05/07/2099

योगिनी  
पिंगला 0वर्ष 2मा 13दि  
संकटा

13/11/2020

13/11/2028

संकटा	25/08/2022
मंगला	14/11/2022
पिंगला	25/04/2023
धान्या	25/12/2023
भामरी	13/11/2024
भद्रिका	24/12/2025
उल्का	25/04/2027
सिद्धा	13/11/2028

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र  
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश  
+919340201506, 7024210124  
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

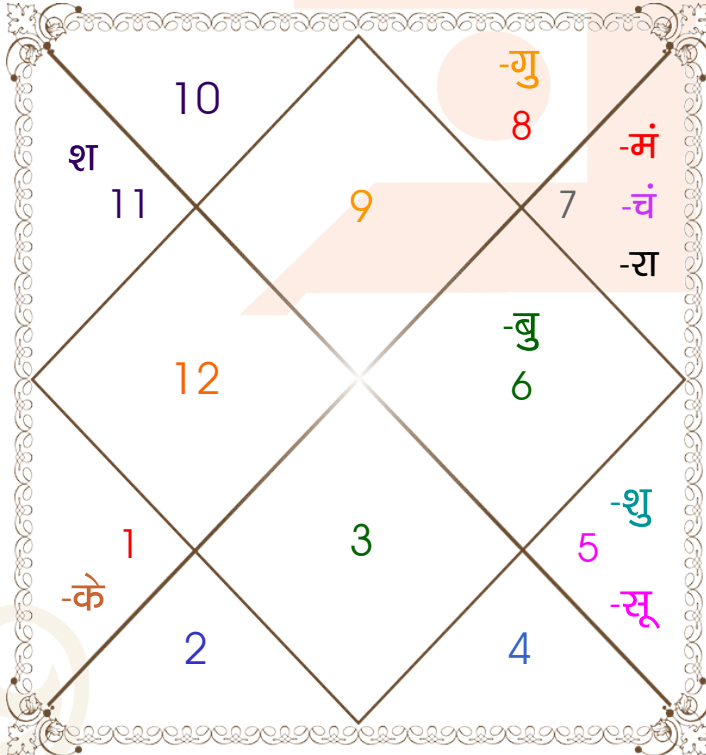
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	26:49:27	367:51:45	उत्तराषाढा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	---
सूर्य			सिंह	13:46:00	00:58:02	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	मूलत्रिकोण
चंद्र			तुला	18:38:06	13:47:26	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	सम राशि
मंगल			तुला	01:42:30	00:39:05	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	सम राशि
बुध			कन्या	09:15:58	01:16:07	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	उच्च राशि
गुरु			वृश्चि	12:57:54	00:05:02	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	राहु	मित्र राशि
शुक्र	अ		सिंह	16:37:38	01:14:25	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि
शनि	व		कुंभ	28:36:51	00:04:23	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	स्वराशि
राहु			तुला	03:46:28	00:01:06	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	मित्र राशि
केतु			मेष	03:46:28	00:01:06	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	चंद्र	मित्र राशि
हर्ष	व		मक	03:14:36	00:01:38	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	शनि	---
नेप	व		धनु	29:17:23	00:01:02	उत्तराषाढा	1	21	गुरु	सूर्य	राहु	---
प्लूटो			वृश्चि	04:09:48	00:00:46	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
दशम भाव			तुला	11:31:16	--	स्वाति	--	15	शुक्र	राहु	शनि	--

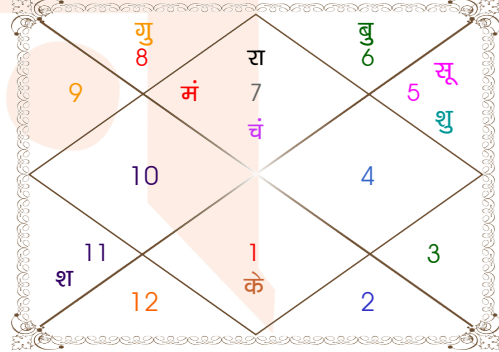
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:47:56

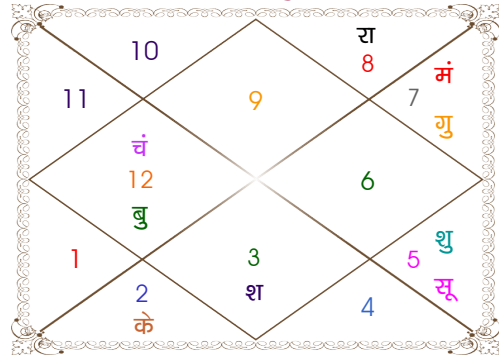
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र  
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश  
+919340201506, 7024210124  
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 14:16:25	धनु 26:49:27
2	मकर 14:16:25	कुम्भ 01:43:23
3	कुम्भ 19:10:21	मीन 06:37:20
4	मीन 24:04:18	मेष 11:31:16
5	मेष 24:04:18	वृष 06:37:20
6	वृष 19:10:21	मिथुन 01:43:23
7	मिथुन 14:16:25	मिथुन 26:49:27
8	कर्क 14:16:25	सिंह 01:43:23
9	सिंह 19:10:21	कन्या 06:37:20
10	कन्या 24:04:18	तुला 11:31:16
11	तुला 24:04:18	वृश्चिक 06:37:20
12	वृश्चिक 19:10:21	धनु 01:43:23

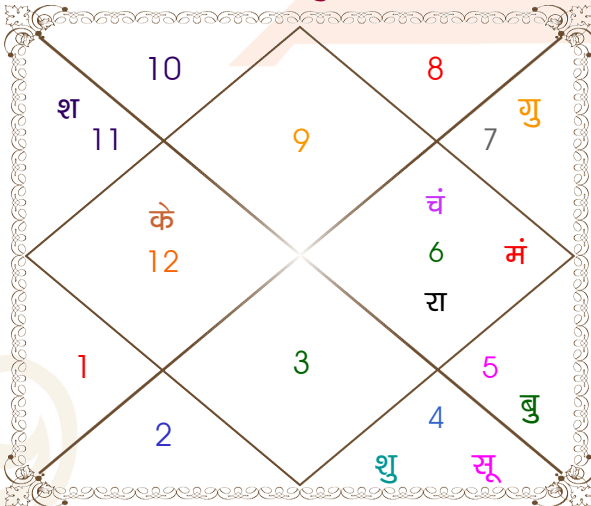
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	26:49:27
2	कुम्भ	03:03:14
3	मीन	09:44:14
4	मेष	11:31:16
5	वृष	07:59:52
6	मिथुन	01:54:13
7	मिथुन	26:49:27
8	सिंह	03:03:14
9	कन्या	09:44:14
10	तुला	11:31:16
11	वृश्चिक	07:59:52
12	धनु	01:54:13

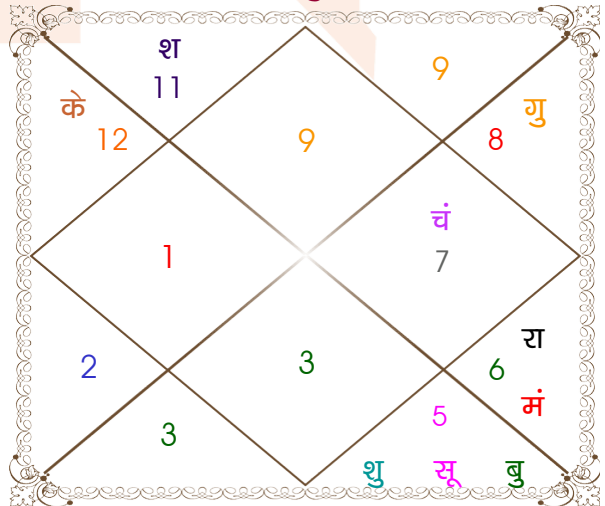
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



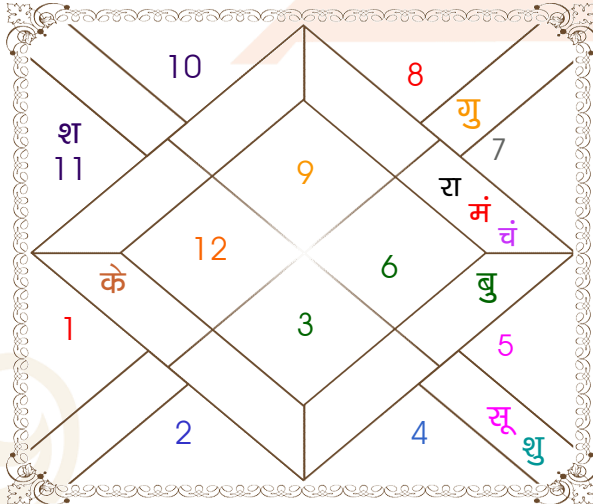
## कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	कारक			अवस्था			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	स्वस्थ	सभा	6.25	59 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	वृद्ध	निपीदित	निद्रा	0.86	36 %
मंगल	कलत्र	भातृ	बाल	निपीदित	आगमन	2.12	49 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	वृद्ध	दीप्त	निद्रा	14.52	73 %
गुरु	पुत्र	धन	युवा	मुदित	प्रकाश	2.70	58 %
शुक्र	भातृ	कलत्र	युवा	विकल	आगमन	0.72	8 %
शनि	आत्मा	आयु	मृत	स्वस्थ	नेत्रपाणि	2.14	50 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	मुदित	आगम	0.00	44 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	मुदित	आगमन	0.00	44 %
कुल						29.31	

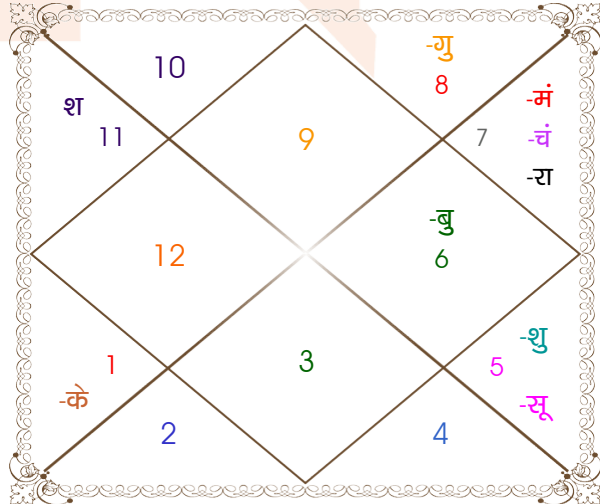
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

### चलित कुंडली



### लग्न-चलित



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 1 वर्ष 10 मास 3 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
31/08/1995	04/07/1997	04/07/2013	04/07/2032	04/07/2049
04/07/1997	04/07/2013	04/07/2032	04/07/2049	04/07/2056
00/00/0000	गुरु 22/08/1999	शनि 07/07/2016	बुध 01/12/2034	केतु 30/11/2049
00/00/0000	शनि 05/03/2002	बुध 17/03/2019	केतु 28/11/2035	शुक्र 31/01/2051
00/00/0000	बुध 10/06/2004	केतु 25/04/2020	शुक्र 28/09/2038	सूर्य 07/06/2051
00/00/0000	केतु 17/05/2005	शुक्र 26/06/2023	सूर्य 04/08/2039	चंद्र 06/01/2052
00/00/0000	शुक्र 16/01/2008	सूर्य 07/06/2024	चंद्र 03/01/2041	मंगल 04/06/2052
00/00/0000	सूर्य 03/11/2008	चंद्र 06/01/2026	मंगल 31/12/2041	राहु 22/06/2053
31/08/1995	चंद्र 05/03/2010	मंगल 15/02/2027	राहु 19/07/2044	गुरु 29/05/2054
चंद्र 16/06/1996	मंगल 09/02/2011	राहु 22/12/2029	गुरु 25/10/2046	शनि 08/07/2055
मंगल 04/07/1997	राहु 04/07/2013	गुरु 04/07/2032	शनि 04/07/2049	बुध 04/07/2056

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
04/07/2056	04/07/2076	05/07/2082	04/07/2092	05/07/2099
04/07/2076	05/07/2082	04/07/2092	05/07/2099	00/00/0000
शुक्र 04/11/2059	सूर्य 22/10/2076	चंद्र 05/05/2083	मंगल 30/11/2092	राहु 18/03/2102
सूर्य 03/11/2060	चंद्र 22/04/2077	मंगल 04/12/2083	राहु 19/12/2093	गुरु 11/08/2104
चंद्र 05/07/2062	मंगल 28/08/2077	राहु 04/06/2085	गुरु 25/11/2094	शनि 18/06/2107
मंगल 04/09/2063	राहु 23/07/2078	गुरु 04/10/2086	शनि 03/01/2096	बुध 04/01/2110
राहु 03/09/2066	गुरु 11/05/2079	शनि 04/05/2088	बुध 31/12/2096	केतु 22/01/2111
गुरु 04/05/2069	शनि 22/04/2080	बुध 04/10/2089	केतु 29/05/2097	शुक्र 22/01/2114
शनि 04/07/2072	बुध 26/02/2081	केतु 05/05/2090	शुक्र 29/07/2098	सूर्य 17/12/2114
बुध 05/05/2075	केतु 04/07/2081	शुक्र 03/01/2092	सूर्य 04/12/2098	चंद्र 01/09/2115
केतु 04/07/2076	शुक्र 05/07/2082	सूर्य 04/07/2092	चंद्र 05/07/2099	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 1 वर्ष 9 मा 30 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शनि - मंगल</b> 06/01/2026 15/02/2027	<b>शनि - राहु</b> 15/02/2027 22/12/2029	<b>शनि - गुरु</b> 22/12/2029 04/07/2032	<b>बुध - बुध</b> 04/07/2032 01/12/2034	<b>बुध - केतु</b> 01/12/2034 28/11/2035
मंगल 30/01/2026 राहु 31/03/2026 गुरु 24/05/2026 शनि 27/07/2026 बुध 23/09/2026 केतु 16/10/2026 शुक्र 23/12/2026 सूर्य 12/01/2027 चंद्र 15/02/2027	राहु 21/07/2027 गुरु 07/12/2027 शनि 20/05/2028 बुध 14/10/2028 केतु 14/12/2028 शुक्र 05/06/2029 सूर्य 27/07/2029 चंद्र 22/10/2029 मंगल 22/12/2029	गुरु 24/04/2030 शनि 18/09/2030 बुध 27/01/2031 केतु 22/03/2031 शुक्र 23/08/2031 सूर्य 08/10/2031 चंद्र 24/12/2031 मंगल 16/02/2032 राहु 04/07/2032	बुध 06/11/2032 केतु 27/12/2032 शुक्र 23/05/2033 सूर्य 06/07/2033 चंद्र 17/09/2033 मंगल 07/11/2033 राहु 19/03/2034 गुरु 14/07/2034 शनि 01/12/2034	केतु 22/12/2034 शुक्र 20/02/2035 सूर्य 10/03/2035 चंद्र 09/04/2035 मंगल 01/05/2035 राहु 24/06/2035 गुरु 11/08/2035 शनि 08/10/2035 बुध 28/11/2035
<b>बुध - शुक्र</b> 28/11/2035 28/09/2038	<b>बुध - सूर्य</b> 28/09/2038 04/08/2039	<b>बुध - चंद्र</b> 04/08/2039 03/01/2041	<b>बुध - मंगल</b> 03/01/2041 31/12/2041	<b>बुध - राहु</b> 31/12/2041 19/07/2044
शुक्र 18/05/2036 सूर्य 09/07/2036 चंद्र 03/10/2036 मंगल 03/12/2036 राहु 07/05/2037 गुरु 22/09/2037 शनि 05/03/2038 बुध 29/07/2038 केतु 28/09/2038	सूर्य 13/10/2038 चंद्र 08/11/2038 मंगल 26/11/2038 राहु 12/01/2039 गुरु 22/02/2039 शनि 12/04/2039 बुध 26/05/2039 केतु 13/06/2039 शुक्र 04/08/2039	चंद्र 16/09/2039 मंगल 17/10/2039 राहु 02/01/2040 गुरु 11/03/2040 शनि 01/06/2040 बुध 13/08/2040 केतु 13/09/2040 शुक्र 08/12/2040 सूर्य 03/01/2041	मंगल 24/01/2041 राहु 19/03/2041 गुरु 06/05/2041 शनि 03/07/2041 बुध 23/08/2041 केतु 13/09/2041 शुक्र 13/11/2041 सूर्य 01/12/2041 चंद्र 31/12/2041	राहु 20/05/2042 गुरु 21/09/2042 शनि 15/02/2043 बुध 27/06/2043 केतु 21/08/2043 शुक्र 23/01/2044 सूर्य 09/03/2044 चंद्र 26/05/2044 मंगल 19/07/2044
<b>बुध - गुरु</b> 19/07/2044 25/10/2046	<b>बुध - शनि</b> 25/10/2046 04/07/2049	<b>केतु - केतु</b> 04/07/2049 30/11/2049	<b>केतु - शुक्र</b> 30/11/2049 31/01/2051	<b>केतु - सूर्य</b> 31/01/2051 07/06/2051
गुरु 07/11/2044 शनि 18/03/2045 बुध 13/07/2045 केतु 30/08/2045 शुक्र 15/01/2046 सूर्य 26/02/2046 चंद्र 06/05/2046 मंगल 23/06/2046 राहु 25/10/2046	शनि 30/03/2047 बुध 16/08/2047 केतु 12/10/2047 शुक्र 24/03/2048 सूर्य 12/05/2048 चंद्र 02/08/2048 मंगल 29/09/2048 राहु 23/02/2049 गुरु 04/07/2049	केतु 13/07/2049 शुक्र 07/08/2049 सूर्य 14/08/2049 चंद्र 27/08/2049 मंगल 04/09/2049 राहु 27/09/2049 गुरु 17/10/2049 शनि 09/11/2049 बुध 30/11/2049	शुक्र 09/02/2050 सूर्य 03/03/2050 चंद्र 07/04/2050 मंगल 02/05/2050 राहु 05/07/2050 गुरु 31/08/2050 शनि 06/11/2050 बुध 06/01/2051 केतु 31/01/2051	सूर्य 06/02/2051 चंद्र 17/02/2051 मंगल 24/02/2051 राहु 15/03/2051 गुरु 01/04/2051 शनि 22/04/2051 बुध 10/05/2051 केतु 17/05/2051 शुक्र 07/06/2051

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>केतु - चंद्र</b> 07/06/2051 06/01/2052	<b>केतु - मंगल</b> 06/01/2052 04/06/2052	<b>केतु - राहु</b> 04/06/2052 22/06/2053	<b>केतु - गुरु</b> 22/06/2053 29/05/2054	<b>केतु - शनि</b> 29/05/2054 08/07/2055
चंद्र 25/06/2051 मंगल 08/07/2051 राहु 09/08/2051 गुरु 06/09/2051 शनि 10/10/2051 बुध 09/11/2051 केतु 21/11/2051 शुक्र 27/12/2051 सूर्य 06/01/2052	मंगल 15/01/2052 राहु 07/02/2052 गुरु 26/02/2052 शनि 21/03/2052 बुध 11/04/2052 केतु 20/04/2052 शुक्र 15/05/2052 सूर्य 22/05/2052 चंद्र 04/06/2052	राहु 31/07/2052 गुरु 20/09/2052 शनि 20/11/2052 बुध 13/01/2053 केतु 05/02/2053 शुक्र 10/04/2053 सूर्य 29/04/2053 चंद्र 31/05/2053 मंगल 22/06/2053	गुरु 07/08/2053 शनि 30/09/2053 बुध 17/11/2053 केतु 07/12/2053 शुक्र 02/02/2054 सूर्य 19/02/2054 चंद्र 19/03/2054 मंगल 08/04/2054 राहु 29/05/2054	शनि 01/08/2054 बुध 27/09/2054 केतु 21/10/2054 शुक्र 28/12/2054 सूर्य 17/01/2055 चंद्र 20/02/2055 मंगल 15/03/2055 राहु 15/05/2055 गुरु 08/07/2055
<b>केतु - बुध</b> 08/07/2055 04/07/2056	<b>शुक्र - शुक्र</b> 04/07/2056 04/11/2059	<b>शुक्र - सूर्य</b> 04/11/2059 03/11/2060	<b>शुक्र - चंद्र</b> 03/11/2060 05/07/2062	<b>शुक्र - मंगल</b> 05/07/2062 04/09/2063
बुध 28/08/2055 केतु 18/09/2055 शुक्र 18/11/2055 सूर्य 06/12/2055 चंद्र 05/01/2056 मंगल 26/01/2056 राहु 20/03/2056 गुरु 08/05/2056 शनि 04/07/2056	शुक्र 23/01/2057 सूर्य 25/03/2057 चंद्र 04/07/2057 मंगल 13/09/2057 राहु 15/03/2058 गुरु 24/08/2058 शनि 05/03/2059 बुध 25/08/2059 केतु 04/11/2059	सूर्य 22/11/2059 चंद्र 22/12/2059 मंगल 13/01/2060 राहु 07/03/2060 गुरु 25/04/2060 शनि 22/06/2060 बुध 13/08/2060 केतु 03/09/2060 शुक्र 03/11/2060	चंद्र 24/12/2060 मंगल 28/01/2061 राहु 29/04/2061 गुरु 19/07/2061 शनि 24/10/2061 बुध 18/01/2062 केतु 23/02/2062 शुक्र 04/06/2062 सूर्य 05/07/2062	मंगल 29/07/2062 राहु 01/10/2062 गुरु 27/11/2062 शनि 03/02/2063 बुध 04/04/2063 केतु 29/04/2063 शुक्र 09/07/2063 सूर्य 30/07/2063 चंद्र 04/09/2063
<b>शुक्र - राहु</b> 04/09/2063 03/09/2066	<b>शुक्र - गुरु</b> 03/09/2066 04/05/2069	<b>शुक्र - शनि</b> 04/05/2069 04/07/2072	<b>शुक्र - बुध</b> 04/07/2072 05/05/2075	<b>शुक्र - केतु</b> 05/05/2075 04/07/2076
राहु 15/02/2064 गुरु 10/07/2064 शनि 31/12/2064 बुध 04/06/2065 केतु 07/08/2065 शुक्र 05/02/2066 सूर्य 01/04/2066 चंद्र 01/07/2066 मंगल 03/09/2066	गुरु 11/01/2067 शनि 14/06/2067 बुध 30/10/2067 केतु 26/12/2067 शुक्र 06/06/2068 सूर्य 24/07/2068 चंद्र 13/10/2068 मंगल 09/12/2068 राहु 04/05/2069	शनि 04/11/2069 बुध 16/04/2070 केतु 23/06/2070 शुक्र 02/01/2071 सूर्य 28/02/2071 चंद्र 05/06/2071 मंगल 11/08/2071 राहु 01/02/2072 गुरु 04/07/2072	बुध 28/11/2072 केतु 27/01/2073 शुक्र 18/07/2073 सूर्य 08/09/2073 चंद्र 03/12/2073 मंगल 02/02/2074 राहु 07/07/2074 गुरु 22/11/2074 शनि 05/05/2075	केतु 30/05/2075 शुक्र 09/08/2075 सूर्य 30/08/2075 चंद्र 05/10/2075 मंगल 29/10/2075 राहु 01/01/2076 गुरु 27/02/2076 शनि 05/05/2076 बुध 04/07/2076

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

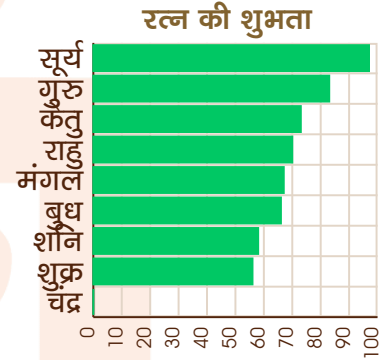
मूलांक	4
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 4, 6, 9
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	97%	भाग्योदय
पुखराज	गुरु	83%	कम खर्च, स्वास्थ्य, सुख
लहसुनिया	केतु	73%	सन्तति सुख, धनार्जन
गोमेद	राहु	70%	धनार्जन, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	67%	धनार्जन, सन्तति सुख, कम खर्च
पन्ना	बुध	66%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
नीलम	शनि	58%	पराक्रम, धन
हीरा	शुक्र	56%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
मोती	चंद्र	0%	हानि, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	04/07/1997	85%	0%	55%	66%	83%	62%	64%	83%	61%
गुरु	04/07/2013	100%	9%	73%	53%	95%	38%	58%	70%	73%
शनि	04/07/2032	85%	0%	55%	72%	83%	62%	70%	77%	61%
बुध	04/07/2049	100%	0%	67%	78%	83%	62%	58%	70%	73%
केतु	04/07/2056	85%	0%	73%	66%	83%	62%	40%	58%	86%
शुक्र	04/07/2076	85%	0%	67%	72%	83%	69%	64%	77%	80%
सूर्य	05/07/2082	100%	9%	73%	66%	89%	38%	40%	58%	61%
चंद्र	04/07/2092	100%	22%	67%	72%	83%	56%	58%	58%	61%
मंगल	05/07/2099	100%	9%	80%	53%	89%	56%	58%	58%	80%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	व्यय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती हैं परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पत्ति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक

व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे।



**श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र**  
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश  
+919340201506,7024210124  
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल, गुरु और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

#### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली धनु लग्न की हैं। आदर्शवादी होने के कारण आप उत्साही रहते हैं। छल-कपट की भावना आपमें नहीं होती और कभी इनके साथ ऐसा होने पर ये लोग काफी समय तक उस बारे में सोचते रहते हैं, तो इन्हें अपनी इस आदत का बदलने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आपके धन संयम/प्रबंधन (वर्तमान में वित्तीय प्रबंधक या सलाहकार) की कला से ओतप्रोत बने रह सकते हैं। आपमें दूरदर्शिता का गुण भी देखा जाता है जिस कारण इनके कार्यों में हानि की मात्रा में भी कमी आती है।

ईश्वरप्रिय होने के कारण गलत कार्यों से दूरी बनाये रखते हैं और कभी-कभी चिन्तित भी हो जाते हैं। आप हमेशा प्रसन्नचित्त अवस्था में रहने का प्रयास करते हैं। आप अपनी

बातों में गंभीरता लिये होते हैं। धनी, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होने की योग्यता रखते हैं। आप अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं, परन्तु बिना मांगे किसी को सलाह देने से बचें अन्यथा आलोचना के पात्र बन सकते हैं। आपकी वित्त प्रबंधन / सलाह अच्छी होती है।

षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव - भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग लग्न से आठवां भाव अष्टम कहलाता है। इस भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए शुक्र षष्ठेश व एकादशेश है, आप की संतान विद्रोही हो सकती है, जीवन साथी से अनबन, मन में खिन्नता, व्यभिचारी तथा बन्धु विरोधी हो सकते हैं।

चन्द्र अष्टमेश हैं। आपके धनु लग्न में अष्टमेश चन्द्र है, चन्द्र की यह स्थिति आपको बचपन में कष्ट, पानी के दुष्प्रभाव से होने वाले रोगों के प्रभाव में शीघ्र आने की संभावना, यह योग धन व सम्मान की हानि का कारण बनता है।

मंगल द्वादशेश तथा पंचमेश होते हैं। व्यय अधिक, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, भाई-बहनों से सामान्य सुख, सामान्य पराक्रमी, शत्रु से संघर्ष में सफल, जीवन साथी से कष्ट दे सकता है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सहा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपत्ति का नाश और माता-पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा

दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं शांत स्वभाव के व्यक्ति होते हैं परन्तु यदाकदा ये अभिमान के भाव का प्रदर्शन करते हैं। धार्मिकता की भावना इनमें विद्यमान रहती है तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करते हैं तथा उनमें सफलता भी प्राप्त करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत्त रहकर ये भौतिक सुखों का भी उपभोग करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरों पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता की भी इनकी प्रवृत्ति होती है तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती रहती है। धर्म, राजनीति, कानून तथा गणित या ज्योतिष आदि में इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। भौतिक प्रलोभनों की अपेक्षा इन्हें प्रेम से आसानी से वश में किया जा सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली पुरुष होंगे तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे अतः विभिन्न विषयों का आपको अच्छा ज्ञान होगा। कला के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा जीवन में निहित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करेंगे। साथ ही अन्य जनों से कभी भी द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रखेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी आपका उदारतापूर्वक व्यवहार रहेगा। इसके अतिरिक्त अपनी व्यवहार कुशलता, बुद्धिमता तथा धैर्य से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा वैदिक धार्मिक या ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करेंगे तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि तथा यश अर्जित करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा सुखैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। पुत्र संतति से आप युक्त होंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही पिता के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। इससे आपको आत्मसन्तुष्टि की अनुभूति होगी। परिवार की उन्नति एवं समृद्धि में आपका प्रमुख सहयोग रहेगा तथा समाजिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप आस्तिक विचारों के पुरुष होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही तीर्थयात्रा आदि के भी योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान सहयोग तथा लाभ मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी तथा धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा सर्व भौतिक सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगे तथा अपना अधिकांश समय अनावश्यक वार्तालाप में ही व्यतीत करेंगे। आप इतनी बातूनी प्रकृति के व्यक्ति होंगे कि अन्य लोग आसानी से आप पर काबू नहीं पा सकते हैं। आपका स्वभाव आधुनिक विचारों से युक्त रहेगा तथा विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपकी एक मुख्य विशेषता यह रहेगी कि आप किसी को भी अनावश्यक रूप से अपना मित्र नहीं बनाएंगे तथा अत्यंत ही सोच समझकर ही किसी से मित्रता करेंगे जब आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जाएंगे।

आप आंतरिक मन से पारिवारिक जनों की पूर्ण चिंता करेंगे परन्तु प्रत्यक्ष में उपेक्षा के भाव को ही प्रदर्शित करेंगे। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य अनावश्यक मतभेद की भी संभावना रहेगी तथापि उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलता रहेगा तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्न तथा परिश्रमशील रहेंगे। आप विभिन्न स्वादों के प्रिय रहेंगे तथा अवसरानुकूल इनका आस्वादन करते रहेंगे। वृद्धावस्था में आपको नेत्र संबन्धी कष्ट की भी संभावना रहेगी। इसके अतिरिक्त नौकरी या अन्य साधनों से आप इच्छित मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही विदेश भ्रमण आदि से भी लाभ की संभावना रहेगी। इस प्रकार वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में आप समर्थ रहेंगे।

## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों से भी युक्त होंगे एवं आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में अपना यथोचित स्तर बनाए रखने में समर्थ होंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको किसी श्रेष्ठ या वृद्ध व्यक्ति से वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। स्वपरिश्रम, बुद्धिमता एवं योग्यता से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशिष्ट एवं शीघ्र लाभ के योग बनते हैं। अतः चल सम्पत्ति पर विशेष निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको सुन्दर विस्तृत एवं आकर्षक आवास की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप प्रारंभ से ही उत्तम वाहन प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी शिक्षित, बुद्धिमान एवं सरल स्वभाव की महिला होगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता तथा उत्तम कार्य कलापों से सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा प्रभावित रखेंगी। परिवार के सभी लोग उन्हें वांछित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी चहुमुखी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा। आपकी माता के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रुचि रहेगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको से सफलताएं प्राप्त करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण करेंगे इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अग्रसर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी उच्च तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्य क्रम में भी उच्चस्तरीय डिग्री अर्जित करने में समर्थ होंगे।

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी तथा इससे आपको समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती रहेगी। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि से शीघ्र करने में समर्थ होंगे जिससे अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी कम ही रुचि होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान साहित्य तथा पाश्चात्य भाषा के अध्ययन में आप विशेष रुचिशील होंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में स्वयं को समाज के सम्मुख स्थापित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा ऐसे सम्बन्धों में आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम प्रसंगों में आप मर्यादा एवं नैतिकता का भी पालन करेंगे तथा यथार्थवादी दृष्टि कोण अपनाएंगे। यद्यपि आपका भावात्मक आकर्षण भी होगा लेकिन भावुकता के भाव में न्यूनता होगी तथापि आपका प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

केतु की संतति भाव में स्थिति के प्रभाव से संतति की प्राप्ति यथोचित समय पर होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता रहेगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता पिता के प्रति यद्यपि उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वच्छन्द प्रवृत्ति होने के कारण यदा-कदा उनका कहना कम ही मानेंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यों को करने में उनकी सलाह कम ही लेंगे। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करने देने चाहिए जिससे उनका आत्म विश्वास बना रहेगा तथा आपसी सम्बन्धों में भी सदभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपकी पूर्ण देख-भाल करेंगे लेकिन आपको भी वृद्धावस्था के लिए कुछ न कुछ धन संचित करके अवश्य रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों से सुरक्षित रहेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही वे वांछित सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी उनकी शिक्षा का उच्चस्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। आपकी संतति योग्य गुणवान एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे। इससे आपके मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बच्चों पर आपको गर्व होगा। अतः जीवन में आपका संतति सुख अच्छा रहेगा।

## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया मिथुन राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कलाप्रेमी तथा हास्य प्रिय प्रवृत्ति का व्यक्ति होता है। बृहस्पति के प्रभाव से वह विद्वान् साहित्य प्रेमी उत्तम कार्यो को करने वाला तथा चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील एवं विनम्र स्वभाव की महिला होंगी तथा सांसारिक कार्यो को करने में दक्ष रहेंगी। उनकी वाणी मधुर होगी तथा उच्च कोटि के साहित्य के प्रति अध्ययन की रुचि होगी। वह हास्य युक्त प्रवृत्ति की भी महिला होंगी जिससे सभी लोग उनके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग पुष्ट एवं सुडौल होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। बृहस्पति के प्रभाव से आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कला के प्रति उनका प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह किसी परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति प्रबल आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा जीवन के मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी जिससे आप प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। सांसारिक महत्व के कार्यो को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में सम्पन्न होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आप जीवन में नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें पितृवत सम्मान प्रदान करेंगे तथा महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी सलाह एवं सहमति अवश्य लेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा एवं श्रद्धा की भावना होगी तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार तथा मधुरवाणी से प्रभावित होंगे एवं उन्हें यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। इससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको यथोचित लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसमें इच्छित लाभ एवं उन्नति होगी।

## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही बुध भी दशमभाव में ही स्थित है। कन्या राशि एवं बुध दोनों पृथ्वी तत्व प्रधान है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होगा परन्तु बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं की भी इसमें प्रबलता रहेगी आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के इच्छुक भी होंगे एवं परिश्रम पूर्वक कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

दशमभाव में कन्याराशिस्थ बुध के प्रभाव से आप लिपिकीय कार्य, लेखक, कवि, चित्रकार, वास्तुकार, ज्योतिषी, जिल्दसाज, शिक्षक, पुस्तक लेखक, यंत्र निर्माण कर्ता, संशोधक, अनुवादक, वकील, दूतकार्य, टेलीफोन आपरेटर या दूरभाष विभाग तथा राजनीति में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति के व्यक्तिगत सहायक के रूप में वांछित उन्नति सफलता एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। साथ ही उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी दलाली पुस्तक विक्रय या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने कलात्मक वस्तुएं या वास्तुकला, वकालत, लेखाकार आदि के स्वतंत्र व्यवसाय एवं कार्यों से आप को इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे अतः उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपना कार्य या व्यापार प्रारंभ करें।

दशमभाव में स्वराशिस्थ ही बुध के प्रभाव से जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा तथा सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे जिससे आपके समाज में प्रभाव में वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। आप किसी सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्था में किसी सम्माननीय पदाधिकारी या सदस्य के रूप में मनोनीत होंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता बुद्धिमान शिक्षित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चशिक्षा के लिए सदैव तत्पर होंगे। आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा आप भी अपने परिश्रम ईमानदारी एवं योग्यता से पिता की प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह तथा सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व जीवनसाथी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बना रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में जीवनसाथी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि दोनों ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए ये समय उपयुक्त नहीं है। अतः इस वर्ष आप कोई निवेश न करें।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके जीवनसाथी के साथ समन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

02 जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगा। आपके माता पिता कास्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरा संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्त के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आपके मन में सकारात्मक विचार आएं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

02 जून के बाद स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरुजल तत्व राशि में होने कारण कफ, पाचनतन्त्र व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान कर सकते हैं परन्तु 31 अक्टूबर के बाद आप के स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए समय अच्छा है।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपकी उच्च शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को अभी कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने स्थान से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरणमनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 02 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 02जूनके बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएँगे।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।



## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान केगुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। किसी पर अधिक विश्वास करना आप के लिए लाभ प्रद नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र मेंगुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

जून के बाद शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप भाग्य की अनुकूलता के कारण उन्नति करेंगे। 3 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय कोई भी निर्णय बहुत सोच विचार कर लेना चाहिए। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में कमी ला सकते हैं। आय के सारे मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। आपको चोरी आदि से धन हानि भी हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। रोग दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियोंको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। परिवार या संबंधियों के मांगलिक कार्य व बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पाप ग्रह से प्रभावित होने के कारण आपका घरेलू वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी। परिवार में स्वार्थ की भावना उत्पन्न होगी और इसी स्वार्थ के कारण पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके अंदर वाणी दोष उत्पन्न हो सकता है अतः अच्छा होगा कि इस समय के अंतराल में आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा।

जून के बाद पारिवारिक वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान संबंधित परेशानी बनी रहेंगी। आपके बच्चों की उन्नति में भी व्यवधान आ सकता है, जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाईयों का सामना करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतानोत्पत्ति में विलम्ब हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा योग बन रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरुके कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में रुचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्त के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी, साथ ही आलस्य का त्याग करें।

जून से गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से घर से दूर की यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण भी हो सकता है।

26 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। एकाग्रता नहीं रहने के कारण ध्यान, मन्त्र पाठ इत्यादि क्रियाएं नहीं कर पाएंगे। जून के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप किसी को गुरु भी बना सकते हैं। उनसे गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पिली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- बुधवार या शनिवार को चिड़ियों को दाना डालें।

## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। 28 फरवरी से भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ राहु का नकारात्मक प्रभाव आपके व्यवसाय पर पड़ेगा।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में हो रहा है। मानसिक अशान्ति एवं शारीरिक आलस्यता के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान आएंगे। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको विवेक से काम लेना चाहिए।

### धन संपत्ति

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा।

फरवरी के बाद पिता से लाभ मिलेगा। बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से शारीरिक व्याधी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे। 24 जुलाई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पीड़ित होने के कारण घरेलू वातावरण अशान्त बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। 23 फरवरी के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

24 जुलाई से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

### संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु फरवरी के बाद बहुत बढ़िया हो रहा है। शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

24 जुलाई के बाद सफलता प्राप्ति लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। आप अपनी मेहनत के बल पर ही लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा परन्तु किंचित मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 28 फरवरी के बाद गुरु की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि के संकेत हैं।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान पर हो रहा है। उस समय स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा। आलस्य की भावना बनी रहेगी। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु फरवरी के बाद समय उत्तम हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय बहुत बढ़िया चल रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

24 जुलाई के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी और अपने शत्रुओं पीछे छोड़कर आगे बढ़ेंगे

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। फरवरी के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

24 जुलाई के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

28 फरवरी से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु लग्न भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ होगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आपको कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। इस सफलता के पीछे आपके भाईयों का सहयोग होगा। व्यापार का स्तर बढ़ाने के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धनागम के योग प्रबल होंगे तथा आय के नये साधन मिलेंगे।

25 अगस्त के बाद आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से भी लाभ होगा। लग्न स्थान के राहु शारीरिक व्याधि दूर करने में पैसा खर्च करा सकते हैं परन्तु सामान्य काम-काज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। छठे स्थान का शनि शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है।

### घर-परिवार, समाज

घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे परिवार में खुशहाली का माहौल बनेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलता रहेगा। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद संतान

को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

लग्न स्थान के राहु आपका स्वास्थ्य व पारिवारिक अनुकूलता प्रभावित कर सकते हैं। 25 अगस्त के बाद अपने बौद्धिक बल द्वारा आप अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल बना लेंगे। अष्टम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

### संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से संतान के लिए उत्तम योग बन रहे हैं। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि सन्तान विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

25 अगस्त से समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप सन्तान की शिक्षा में सुधार होगा और उनको उन्नति के अवसर भी मिलेंगे। 05 अक्टूबर के बाद समय और भी शुभ है।

### स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से बीमारी नहीं रहने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के फलस्वरूप स्वास्थ्य श्रेष्ठ व मन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु 25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण समय बहुत अच्छा हो रहा है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा शीघ्र ही अपने लिए आय के नवीन स्रोतों का भी सृजन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ प्रभावित होगा।

25 अगस्त के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। सभी बेरोजगारों को नौकरी मिल सकती है। सरकारी अफसरों या वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

### यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

29 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा

लाभ मिलेगा।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी पारिवारिक सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे जिसमें आपके परिवार वालों का पूर्ण सहयोग होगा।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने माता पिता की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।



## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। साल की शुरुआत में आपके कार्यों में देरी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्य को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। शनि का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा। आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी और इस ओर ध्यान देना होगा। जो व्यक्ति रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

### धन संपत्ति

आर्थिक तौर से यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आने वाला है। आपको पहले महीने में प्रतीत नहीं होगा क्योंकि इस दौरान राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं है। आपको आर्थिक हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपको इस दौरान यही सलाह दी जाती है कि इस समय अपनी वित्तीय योजनाओं को निर्धारित कर आगामी समय के लिए खुद को तैयार रखें। अप्रैल के बाद समय आपके लिए बहुत ही अनुकूल हो रहा है। आप बड़े काम करने में सफल होंगे।

23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः पहले से ही कुछ अतिरिक्त धन का संचय करें। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचम भाव का शनि संतान सुख में कमी कर सकता है। ऐसे में अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

आपको बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु के गोचर के बाद आपके घरेलू वातावरण में अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में भी वृद्धि होगी।

### संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। पंचमस्थ शनि आपके बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे उसकी शिक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

मई के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। इस समय के अंतराल में दवा से अधिक दुआ आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी।

23 सितम्बर के बाद द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत अच्छा है।

शनि एवं गुरु के गोचर के बाद समय काफी उत्तम हो जाएगा। आप सारे शत्रुओं को परास्त कर अपने करियर में आगे रहेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। बेरोजगार लोगों को इच्छित नौकरी मिल सकती है।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होंगी। छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

मई के बाद आप ज्यादातर यात्रा पर ही रहेंगे दूर की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य करेंगे। 1 मई से आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख-शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

